सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो

सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो,
अब गोविंद ना आएंगे ।
छोड़ो मेंहदी खड़क संभालो,
खुद ही अपना चीर बचा लो ।
द्युत बिछाये बैठा शकुनि,
मस्तक सब बिक जाएंगे।
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो,अब गोविंद ना आएंगे।
कब तक आस लगाओगे तुम,
बिके हुए अखबारों से
कैसी रक्षा मांग रही हो, दुशासन दरबारों से ।
स्वंय जो लज्जाहीन पड़े है,
वे क्या लाज बचाएंगे।
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो, अब गोविंद ना आएंगे ।
कल तक केवल अंधा राजा,
अब गूंगा बहरा भी है,
होंठ सी दिए है जनता के,
कानों पर पहरा भी है।
तुम्हीं कहो ये अश्रु तुम्हारे
किसको क्या समझायें- ?
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो, अब गोविंद ना आएंगे ।

(पुष्पमित्र उपाध्याय की इन पक्तियों के साथ, भारत की महिला पहलवान पर हो रहे अत्याचार का घोर प्रतिकार है। इन आंसुओं की कीमत संघ परिवार को चुकानी पड़ेगी। आज हर सामाजिक-राजनीतिक दल के समर्थन की जरूरत आ पड़ी है, इन मेडलिस्ट बेटियों को, जंतरमंतर से पार्लियामेंट तक)

कविता/ हुआ न कोई महान

डॉ. रामवीर

कर्नाटक में लगी भाजपा मीठे सपने बुनने,
किन्तु जनता कहती दिख रही हमें नहीं ये चुनने।

रैली पर रैली कर कर के छूट रहा है पसीना,
डरे हुए हैं सिकुड़ न जाए छप्पन इंची सीना।

तुम ने झूठ पे झूठ बोल के लोगों का सुख छीना,
कोई शान्ति से कैसे जीए मुश्किल कर दिया जीना।

कर्नाटक के दूध नन्दिनी तक का भी अपमान,
कहते गुजराती अमूल का ही करियेगा पान।

हर प्रदेश में मात्र तुम्हारी ही चमकेगी दुकान,
अहंकारवश लगे समझने खुद को हिन्दुस्तान।

जनता जब सरकार बदलने की लेती है ठान,
बड़े बड़े तुर्रमखांओं के खींचें जाते कान।

अभी समय है समझ सको तो देना इस पर ध्यान,
दुनिया में ओछे कर्मों से हुआ न कोई महान।

विशेष/ मुगलों ने भारत को एक किया तो देश का नाम इस्लामिक नहीं बल्कि 'हिन्दोस्तान' रखा

राजेंद्र कुमार गुप्ता

हांलाकि, मुगल चाहते तो विजित देश का इस्लामिक नाम भी रख सकते थे, कौन विरोध करता ?

जिनको इलाहाबाद और फैजाबाद चुभता है वह समझ लें कि मुगलों के ही दौर में 'रामपुर' बना रहा तो 'सीतापुर' भी बना रहा। अयोध्या तो बसी ही मुगलों के दौर में। 'राम चरित मानस' भी मुगलिया काल में ही लिखी गयी।

लाहौर में आज भी रामपुरा तथा किशनपुरा के नाम से मौहल्ले कायम हैं। लाहौर से करांची रेलवे रूट पर कोट राधा-कृष्ण नाम से स्टेशन भी कायम है।

आज के वातावरण में मुगलों को सोचता हूँ, मुस्लिम शासकों के बारे में सोचता हूँ तो लगता है कि उन्होंने मुर्खता की। होशियार तो ग्वालियर का सिंधिया घराना था, मैसूर का वाडियार घराना भी था, जयपुर का राजशाही घराना भी था, तो जोधपुर का भी राजघराना था।

टीपू सुल्तान हों या बहादुरशाह ज़फर,,, बेवकूफी कर गये और कोई चिथड़े चिथड़ा हो गया तो किसी को देश की मिट्टी भी नसीब नहीं हुई और सबके वंशज आज भीख माँग रहे हैं। अँग्रेजों से मिल जाते तो वह भी अपने महल बचा लेते और अपनी रियासतें बचा लेते, वाडियार, जोधपुर, सिंधिया और जयपुर राजघराने की तरह उनके भी वंशज आज ऐश करते। उनके भी बच्चे आज मंत्री विधायक बनते।

यह आज का दौर है, यहाँ 'भारत माता की जय' और 'वंदेमातरम' कहने से ही इंसान देशभक्त हो जाता है, चाहे उसका इतिहास देश से गद्दारी का ही क्यूं ना हो।

बहादुर शाह ज़फर ने 1857 के गदर में अँग्रेजों के खिलाफ़ पूरे देश का नेतृत्व किया और उनको पूरे देश के राजा रजवाड़ों तथा बादशाहों ने अपना नेता माना। भीषण लड़ाई के बाद अंग्रेजों की छल कपट नीति से बहादुरशाह ज़फर पराजित हुए और गिरफ्तार कर लिए गये।

ब्रिटिश कैद में जब बहादुर शाह जफर को भूख लगी तो अंग्रेज उनके सामने थाली में परोसकर उनके बेटों के सिर ले आए। उन्होंने अंग्रेजों को जवाब दिया कि - "हिंदोस्तान के बेटे देश के लिए सिर कुर्बान कर अपने बाप के पास इसी अंदाज में आया करते हैं।"

बेवकूफ थे बहादुरशाह ज़फर। आज उनकी पुश्तें भीख माँग रहीं हैं।

अपने इस हिन्दोस्तान की ज़मीन में दफन होने की उनकी चाह भी पूरी ना हो सकी और कैद में ही वह "रंगून" और अब वर्मा की मिट्टी में दफन हो गये। अंग्रेजों ने उनकी कब्र की निशानी भी ना छोड़ी और मिट्टी बराबर करके फसल उगा दी, बाद में एक खुदाई में उनका वहीं से कंकाल मिला और फिर शिनाख्त के बाद उनकी कब्र बनाई गयी! सोचिए कि आज "बहादुरशाह ज़फर" को कौन याद करता है ? क्या मिला उनको देश के लिए दी अपने खानदान की कुर्बानी से ?

ऐसा इतिहास और देश के लिए बलिदान किसी संघी का होता तो अब तक सैकड़ों शहरों और रेलवे स्टेशनों का नाम उनके नाम पर हो गया होता।

क्या इनके नाम पर हुआ ?

नहीं ना ? इसीलिए कहा कि अंग्रेजों से मिल जाना था, ऐसा करते तो ना कैद मिलती ना कैद में मौत, ना यह ग़म लिखते जो रंगून की ही कैद में लिखा :

लगता नहीं है जी मेरा उजड़े दयार में,
किस की बनी है आलम-ए-नापायदार में।
उम्र-ए-दराज़ माँग के लाये थे चार दिन,
दो आरज़ू में कट गये, दो इन्तेज़ार में।
कितना है बदनसीब 'ज़फर' दफ्न के लिए,
दो गज़ ज़मीन भी न मिली कू-ए-यार में॥

दुनिया में जितने नशे हैं, उनमें सबसे तीखा है सत्ता का नशा

सत्ता की खुमारी,सत्ता प्रतिष्ठान से जुड़े हर शख्स में बहुत देर तक रहती है। आप किसी चपरासी से लेकर बड़े बाबू से होते हुए पुलिस,क़ाज़ी,सचिव,मंत्री या महामहिम किसी के भी मुँह के पास अपना मुँह लेकर जाएं तो एक जैसी ही तेज़ दुर्गंध पाएँगे। जैसे सबने किसी एक ही ब्रांड की लगाई हुई हो। कोई लड़खड़ा रहा है, कोई गालियाँ बक रहा है तो किसी की आँखों के लाल-लाल डोरों से आप उसकी खुमारी का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

सत्ता की दूसरी खूबी ये है कि इसे हासिल करने के तुरंत बाद ही इसके चले जाने का ख़ौफ़ तारी हो जाता है।जैसे-जैसे खुमारी बढ़ती है,वैसे-वैसे ख़ौफ़ और ज़्यादा गहराता जाता है।

सुरक्षा के घेरे और ज़्यादा मज़बूत और ऊँचे कर दिए जाते हैं,इतने कि घेरों के उस पार देखना नामुमकिन हो जाता है। सड़क किनारे ठेले पर गोलगप्पों का लुत्फ़ लेता हुआ शायर कह उठता है-"दूर काली बिल्लियों के बीच सहमा जा रहा है,एक राजा नग्न,चिंतामग्न।"

आपने कलंदरों की मस्ती और शाहों के ख़ौफ़ की कितनी ही कहानियाँ सुनी होंगी। पहली-पहली बार राज्य का ख़याल जब आया होगा तो ये फिक्र रही होगी कि लकड़बग्घे, दूसरे जंगली जानवर या दुश्मन कबीले के लोग रात-बिरात हमला करके लोगों के जानमाल को नुक़सान न पहुँचा सकें। इसीलिए सबने अपनी थोड़ी-थोड़ी आज़ादी और एक-एक कटोरी चावल देकर एक शख्स को निगरानी पर लगा दिया,जो और थोड़े से लोगों को अपने साथ लेकर दिनरात बाहरी लोगों और जानवरों पर नज़र रखता होगा।

बस इसके बाद हालात बदलने लगे।चौकीदार ने कुछ दिन तो चौकस चौकीदारी की,उसके बाद वह मुफ़्त की दाल और सत्ता ब्रांड दारू का आदी हो गया।कबीले में इक्के-दुक्का हादसे हुए तो चौकीदार से पूछगछ हुई।चौकीदार बहाने बनाने लगा। कभी हथियारों की कमी का बहाना,कभी दुश्मनों की ताक़त और तादाद का बहाना।लोगों ने थोड़ा और पैसा और कुछ और सामान इकट्ठा करके दे दिया।हालात फिर भी नहीं बदले।तो कबीले के कुछ दूसरे लोग सामने आने लगे-"तुम हटो,हम करेंगे चौकीदारी"।

चौकीदार के लिए ये और भी बड़ा ख़तरा था,चौकीदारी छिन जाने के ख़ौफ़ ने उसकी नींद उड़ा दी। चौकीदार चौबीस घंटों में बस एक या दो घंटे की ही उचकती हुई नींद ले पाता था। अब उसे कबीले के ही हर शख़्स से डर लगने लगा।उसे लगता जैसे सब लोग उसके खिलाफ़ साजिश करने में लगे हुए हैं। उसने सबके ऊपर एक-एक जासूस बिठा दिया। लेकिन इससे भी चौकीदार के मन का ख़ौफ़ कम नहीं हुआ। दरअसल इस सबसे ख़ौफ़ और बढ़ने लगा। चौकीदार विक्षिप्त होने लगा क्योंकि नये-नये दावेदारों की तादाद हर रोज़ बढ़ती ही जा रही थी। लोगों के बीच से ही उठा एक शख्स उन्हें दिन-रात डरा रहा था जो किसी भी जंगली जानवर से ज़्यादा ख़ूंखार और वहशी था, जिसने हमदर्दी का मुलायम और ख़ूबसूरत लबादा ओढ़ लिया था। चौकीदार ने अपने लिए एक से बढ़कर एक ख़ूबसूरत बहुत से लबादे तैयार करवाए जिन्हें वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद बदल देता था। इन लबादों को महंगे इत्र में डुबोया जाता था जिससे सत्ता ब्रांड की शराब की दुर्गंध को कम किया जा सके। लेकिन दुर्गंध और ज़्यादा तीखी होती जाती थी। नागरिकों में असुरक्षा और भय का भाव पहले से भी अधिक बढ़ने लगा था। अपने बुनियादी मक़सद में राज्य फेल हो चुका था।

-श्रीकांत

हरियाणवी हास्य/ डॉ. रणबीर सिंह दहिया

अमेरिकी "हमारे कुत्ते फूटबाल खेलते हैं"
जापानी "हमारी मछलियाँ डांस करती हैं"
चीनी "हमारे हाथी सायकल चलाते हैं"
भारतीय "तुम सब बेकार हो"
सभी एक साथ "वो कैसे ?"
भारतीय "हमारे नेता जुगाड़ तैं पूरा देश चलाते हैं "